

- डॉ० प्रत्यूष गुलेरी

क्रिसमस ईसाइयों का पवित्र पर्व है। यह त्योहार प्रतिवर्ष 25 दिसम्बर को संसार भर में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। क्रिसमस का सम्बन्ध क्राइस्ट से है। क्राइस्ट वह महान् व्यक्तित्व था जिसके नाम पर क्रिश्चयन धर्म प्रचलित है। भारतीय भाषा में इस महान् पुरुष को प्रभु मसीह और अरबी भाषा में ईसा कहा जाता है। प्रभु मसीह के अनुयायी मसीही अथवा 'क्रिश्चयन' कहलाते हैं।

प्रभु मसीह का जन्म आज से लगभग दो हजार वर्ष पहले फिलिस्तीन देश में हुआ, जिसके कुछ भाग को अब इजराइल कहा जाता है। प्रभु मसीह जन्म से यहूदी थे। आपके माता-पिता का वंश यहूदियों के एक महान् राजा दाऊद (डेविड) से सम्बन्ध रखता था। मसीहियों की धार्मिक पुस्तक बाइबल में ऐसी बहुत-सी कथाएं संकलित हैं जिनमें से कुछ प्रभु मसीह के जन्म से पहले और कुछ उनके जन्म के बाद की लिखी हुई हैं। बाइबल में लिखा है कि प्रभु मसीह के जन्म के समय आकाश में एक अद्भुत तारा उदित हुआ था जिसको देखकर पूर्व के देशों के ज्योतिषी फिलिस्तीन पहुंचे थे।

यीशु मसीह की माता का नाम मरियम और पिता का नाम युसुफ था। मसीह का जन्म यहूदी प्रदेश के बैतलहम गांव की गऊशाला में हुआ था। मसीह के अवतरित होने के सम्बन्ध में यह मत प्रचलित है कि परमेश्वर ने जब देखा कि मनुष्य पापी हो गया है तो उसको एक दम नरक में नहीं डाला। परमात्मा मनुष्यों से प्यार करता है, इसलिए उसने स्वर्ग से यीशु मसीह को भेजा। मसीह ने संसार से प्रेम किया। उसने सब धर्मों के लोगों और भाषाओं का सम्मान किया। उसने सभी लोगों से प्रेम किया तथा उन्हें प्रेम करना सिखाया। मसीह ने लोगों को उपदेश दिया कि ईश्वर उन सभी अधर्मियों को क्षमा करता है जो ईश्वर की सच्चे दिल से प्रार्थना करके अच्छा रास्ता अपनाते हैं। उन्होंने कहा कि घृणा अधर्म से होनी चाहिए न कि अधर्मी से। अगर हम उन लोगों को क्षमा करते हैं जिन्होंने हमारे साथ दुर्व्यवहार किया है तो ईश्वर हमारे पापों को क्षमा कर देता है।

यह कहा जाता है कि मसीह में अद्भुत और दिव्य स्पर्श शक्ति विद्यमान थी। उन्होंने अनेक चमत्कार कर दिखलाए। यहाँ तक कि अनेक अंधे, लंगड़े, लूले, विक्षिप्त और कमजोर लोगों को अपने स्पर्श से स्वस्थ करके समाज का उपयोगी अंग बना दिया।

यहूदी लोगों ने उनके उपदेशों को मानने से इन्कार कर दिया और रोमन शासकों से मिलकर उन्हें निर्मम प्राण दण्ड दिलाया। प्रभु मसीह ने 'क्रूस' पर से ही अपने शत्रुओं के लिए प्रार्थना की और कहा - हे ईश्वर। इनको क्षमा करना। ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं। कहते हैं कि उनकी मृत्यु के तीन दिन के बाद ही उनमें पुनः प्राणों का संचार हो गया था। तत्पश्चात् उनका देह पिण्ड एक दिव्य शरीर में परिणत हो गया।

प्रभु मसीह के शुभ कर्मों को स्मरण रखने के लिए क्रिसमस पर्व मनाया जाता है। क्रिसमस के आठ-दस दिन पहले से लोग घरों, दुकानों, कारखानों, स्कूलों और गिरजाघरों की सफाई करना

शुरु कर देते हैं। घरों और बाजारों को नई दुल्हन की तरह सजाया संवारा जाता है। प्रभु मसीह के चित्र दीवारों पर लगाए जाते हैं। 24 दिसम्बर की रात से 1 जनवरी तक पूरा सप्ताह मसीह का जन्म दिवस मनाया जाता है। इसे 'क्रिसमस सप्ताह' भी कहते हैं। क्रिसमस वाले दिन लोग घरों के आँगन में 'क्रिसमस ट्री' बनाते हैं। उसके ऊपर खिलौने, फल-फूल और गुब्बारे आदि लटकाते हैं। रात को उस पर दीपकों तथा मोमबत्तियों का प्रकाश किया जाता है। क्रिसमस की रात को बच्चे 'क्रिसमस फ़ादर' की उत्सुकता से प्रतीक्षा करते हैं। वह बच्चों को अनेक प्रकार के उपहार और मिठाइयाँ आदि देता है। गिरजाघरों में सामूहिक प्रार्थनाएं और आनन्द-गान गाए जाते हैं। इन आनन्द-गानों में उन्न सारी कथात्मक घटनाओं को याद कराया जाता है जो प्रभु मसीह के जन्म पर घटी थीं।

क्रिसमस भी दीवाली की तरह मसीहियों का एक बड़ा दिन माना जाता है। इस अवसर पर बधाई के कार्ड मित्रों तथा सम्बन्धियों आदि को भेजे जाते हैं। आपस में एक दूसरे को मिठाइयों के डिब्बे लिए और दिए जाते हैं। यह बेहद प्रसन्नता का विषय है कि भारत में बहुत से हिन्दु, मुसलमान और सिक्ख भी इस उत्सव में मसीहियों के साथ शामिल होते हैं और अपने इसाई भाईयों को क्रिसमस के पावन अवसर पर मंगल कामनाएं देते हैं।

क्रिसमस जैसे अपने जातीय तथा राष्ट्रीय त्योहारों के प्रति हमें आदर की भावना रखनी चाहिए।

### अभ्यास

1. क्राइस्ट कौन था? भारतीय भाषा में इस महान् पुरुष को किस नाम से जाना जाता है ?
2. प्रभु मसीह के अनुयायी क्या कहलाते हैं ?
3. क्रिसमस पर्व प्रतिवर्ष, कब मनाया जाता है ?
4. प्रभु मसीह के माता-पिता और जन्म स्थान के बारे में बताएं।
5. प्रभु मसीह ने क्रूस पर से अपने शत्रुओं के लिए क्या प्रार्थना की।
6. 'क्रिसमस सप्ताह' से क्या तात्पर्य है ?
7. 'क्रिसमस फ़ादर' की बच्चे उत्सुकता से क्यों प्रतीक्षा करते हैं ?